469
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1173/10/21
आह्वानांक Call No. _____
अवाप्ति सं० Acc. No. 469

891.431
Sh 23 K

18c
IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
10 DEC. 1930

* बन्देमातरम् *

॥ कंगाल-भारत ॥

यानी

स्वराज्य का झंडा

माता बहिनों अब चर्खा चला लो ज़रा ।
अपने भारत की लाज बचा लो ज़रा ॥

व्यौपारियों को भर पेट कमीशन दिया जाता है

लेखक व प्रकाशक—

पं० बाबूराम शर्म्मा बुकसेल्लर बरेली

कोई साहब इस पुस्तक को बिना आज्ञा बाबूराम शर्म्मा
के न छापें, सर्वाधिकार हिन्दी उर्दू का
पं० बाबूराम शर्म्मा के आधीन है

शिंघल प्रिन्टिंग वर्क्स बरेली में छपी ।

द्वितीय बार १००० | १९३० ई० | मूल्य -)

* आवश्यक सूचना *

१ ग्राहिकों से प्रार्थना है कि एक रुपये से कमकी पुस्तकें न मंगावें क्योंकि डाक महसूल दूना होजाने के कारण एक रुपये के माल परभी ।-) से कम महसूल नहीं लगता जो साहब कम का माल मंगावें वह ।-) के टिकट लिफ़ाफे में रखकर भेजदें

२ जो पुस्तकें मंगाई जावें उनके सामने यह लिख देना चाहिये कि यह हिन्दी की यह उर्दू की जो ऐसा नहीं करेंगे उनको पुस्तकें हिन्दी में भेजी जायेंगी

३ ग्राहिकों को अपना पता साफ़ २ लिखना चाहिये मय डाक ख़ाने व ज़िले के, पता साफ़ न होने से माल न रवाना होगा

४ हमारे पुस्तकालय से व्यौपारियों को बहुत काफ़ी कमीशन दिया जाता है इसलिये व्यौपारी भाइयों से प्रार्थना है कि एक दफ़ा हमारे यहां से माल मंगा कर हमारी परिक्षा करें

नोट—इस सूचीपत्र में उन्हीं पुस्तकों के नाम हैं जो हर समय हमारे यहां मिल सकती हैं

पुस्तकें मिलने का पता:—

पं० बाबूराम शर्म्मा बुकसेलर

बांस मंडी—बरेली

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 469
Date 10.12.71
GOVT. OF INDIA

ईश्वर प्रार्थना

शरण में तुम्हारी हम आए हैं भगवन्
सन्देशा यह तुम पास लाए हैं भगवन्
मिटा दीजै दुख अब जो हम सह रहे हैं
तुम्हीं से यह लौ निज लगाये हैं भगवन्
यह भारत गुलामी से जकड़ा हुआ है
छुड़ाओ क्यों देरी लगाये हैं भगवन्
नहीं नैया भारत की अब डूबती है
जने कहां पर आसन लगाये हैं भगवन्
बचाओ योंही हम सबों को आ स्वामी
ज्यों तुम प्रांण गज के बचाये हैं भगवन्
हमें आश एक आप की ही है प्रभो
बिनय सच्ची "शर्म्मा" सुनाये हैं भगवन

खद्दर प्रचार

ग़ज़ल

अबतो खद्दर ही घर २ में मंगवाइये
माता बहिनों को खद्दर ही पहिनाइये

ना विदेशी वस्त्रको अब भूलकर घर लाइये
हो देशका अपने भला, खद्दर को ही अपनाइये
बल्कि घर २ में चरख़े को चलवाइये
अबतो खद्दर ही घर २ में मंगवाइये
गाड़ियों रुपया चला जाता है हा, दीगर जगाह
और आप इससे दिन पै दिन जाते चले होते तबाह
ख़्याल इसका भी दिल में ज़रा लाइये
अब तो खद्दर ही घर २ में मंगवाइये
छोड़िये तनज़ेब मलमल और नट की लंकलाट
साड़ियां रेशम व मख़मल कीजे इनका वाईकाट
सारी चीज़ैं ही खद्दर की बनवाइये
अब तो खद्दर ही घर २ में मंगवाइये
सिर पै देना फ़िल्टकैप अब छैः रुपये की छोड़िये
तीन आने वाली गांधी कैप सिर पर ओढ़िए
बचे रुपयों का आप दूध घी खाइये
अब तो खद्दर ही घर २ में मंगवाइये

(५)

स्वतन्त्र भारत

ग़ज़ल बहरे शिकिस्त

है देश प्यारा हमारा भारत, इसी पै तन मन

को वार देंगे । रहेंगे यातो स्वतंत्र होकर या कर निसावर हम प्रांण देगें ॥ हो चाहें जो कुछ भी हाल तन का, गुलाम बनकर न पर रहेंगे । वजह है क्या जो कि हक़ हमारे इसी तरह से दबे रहेंगे ॥ हमारे धन से हमारे घर पर जो ग़ैर आकर मज़े करेंगे । न होगा ऐसा कभी भी हरगिज़, कि इस क़दर के हम दुख सहेंगे ॥ हक़ूक़ अपने जब मांगते हम, तो डर दिखाते मशीन गन का । यह याद रक्खें वह अपने दिल में, न इन से हरगिज़ हम डर सकेंगे ॥ चलायेंगे गर मशीनगन वह, इधर चलेगा हमारा चरख़ा । इसी एक चर्ख़े से देख लेना, नशा हम उनका उतार देंगे ॥ है उनके हक़ में यही भलाई, हक़ूक़ सारे हमारे देदें ।

कहें द्विज बाबू फिर इस जहां के, हम सारे झगड़े कर पार देंगे ॥

गुलामी के फंदे से आज़ाद करने वाला

चर्ख़ा

बिगड़ी इज्ज़त हमारी बनाएगा चर्ख़ा

देखिए क्या २ रंग ये दिखाएगा चर्ख़ा
गन मशीनों का मुंह बन्द कराएगा चर्ख़ा
उदू के दिलों को हिलाएगा चर्ख़ा
देशी मलमल व मख़मल बनाएगा चर्ख़ा
धोकेबाज़ों से बाज़ी जिताएगा चर्ख़ा
हक़ हमारे यह सारे दिलाएगा चर्ख़ा
यह भारत स्वतन्त्र बनाएगा चर्ख़ा
गुलामी के फन्द से छुड़ाएगा चर्ख़ा
अजी ज़ालिमों को रुलाएगा चर्ख़ा
सदा घूं घूं की जब सुनाएगा चर्ख़ा
खुशी शर्म्मा के दिल दिलाएगा चर्ख़ा

ग़ज़ल

गांधी बाबा का कहना बजायेंगे हम
ध्यान उनके ही कहने पै लायेंगे हम
कपड़े खद्दर के ही सब बनायेंगे हम
माता बहिनों को वह ही पिन्हायेंगे हम
चक्र चर्खे का अब तो चलायेंगे हम
इसी से उदू को हिलायेंगे हम
उठा झंडा सब जा, फिरायेंगे हम
सोते वीरों को सारे जगायेंगे हम
क़ौमी नारे सभी मिल लगायेंगे हम
अपना भारत स्वतन्त्र बनायेंगे हम
जान सब मिलके अपनी लड़ायेंगे हम
प्यारे "शर्म्मा" की ग़ज़लों को गायेंगे हम

परोपकारी वीर

ग़ज़ल

हुए पैदा भारत में नर कैसे २
गांधी बाबा जवाहर बशर कैसे २

दी औरों के पीछे मिटा हस्ती अपनी
उठा जेल में दुख रहे कैसे कैसे
न वहां परभी ज़ालिम उनसंग बाज़आते
करें गर्म पानी से तर कैसे २
न जिस पर भी उफ़्तक की सुन लीजै भाई
फिर हम बैठ घर पर रहें कैसे २
किए वीर अर्जुन समर कैसे २
चले रण में तेग़ो तवर कैसे २
उठो भारत वीरो इसी तौर तुमभी
दिखाते कर देखें हशर कैसे २

आज़ादी का झंडा

ग़ज़ल

आजादी का झंडा भारत में गड़वा दिया गांधी
बाबा ने। सोते से भारत को मित्रो जगवा दिया
गांधी बाबा ने। जो भूल रहे थे मुद्दत से, फिर
याद दिलाई गांधी ने। फिर आज दुबारा चर्ख़े
को चलवा दिया गांधी बाबा ने। सब लगे

पहिरने थे मलमल जो आती आहि विदेशों से।
सो खद्दर भाई हमारों को पहिना दिया गांधी
बाबा ने। गर भला देश का चाहते हो तो
धारण करो स्वदेशी को। नहीं एक दिन सिर
धुन रोओगे जतला दिया गांधी बाबा ने। सब
छोड़ विदेशी कपड़ों को अब पहिनो सभी
स्वदेशी को। कहें बाबूराम क्या अच्छा सबक़
सिखला दिया गांधी बाबा ने ॥

आज़ाद हिन्दुस्तान

हिन्दोस्तां रहेगा अब तो स्वतन्त्र बनकर
मंजूर अब नहीं है, रहना .गुलाम बनकर
रावण व कंस से भट पैदा हुए ज़िमींपर
वह भी रहे न ज़िन्दा, आई क्या क़ज़ा बनकर
हा क्या हुआ मनुष्य हो बेशर्म बन जिये तो
खायेगी कभी तो हा, हमको भी क़ज़ा बनकर
भारत के शेर जागो आंखें ज़रा तो खोलो

क्यों स्यार बनगये हो, जाओ अब शेर बनकर
लेगें स्वराज हरगिज़ छोड़ें न इस परन को
सीने से गोलियां हो चहें पार छलनी बनकर

भारत का लाल गांधी

दिलजान से भी बढ़कर हमको है प्यारा गांधी
जिसने वतन की ख़ातिर तनमन को वारा गांधी
बरबाद ज़िन्दगी की हस्ती मिटादी अपनी
आराम चैन छोड़ा सुख सब बिसारा गांधी
खद्दर गज़ ढाई पै जो करता सिरफ़ गुज़ारा
फिर क्यों न हम सभों का हो नैन का तारा गांधी
सेवा में भारत मां की रक्खी न कसर मुतलक़
धन २ सपूत भारत, भारत का दुलारा गांधी
प्यारा वतन तुम्हें है तुम हो वतन के प्यारे
बस कह रहा तुम्हें यह सारा ज़माना गांधी
आज़ाद फिर हो क्यों ना 'शर्म्मा' वतन तुम्हारा
मौजूद जब जगत में, है चांद सितारा गांधी

देश पर बलिदान

ग़ज़ल

सीखा है सितम तूने किससे यह सितम करना

अच्छा नहीं है ज़ालिम, तेरा यह ज़ुल्म करना
मागें हैं चीज़ अपनी नहिं तेरा कुछ बिगाड़ें
तिसपर भी गोलियों की हमपै बौछार करना
चाहें कितना सितमकरले चाहें कितना मारलेअब
हमने भी देश पर तन सीखा निसार करना
यह तोप गन मशीनें बन्दूक़ और भाले
चाहें सो कुछ चलाले, इनका हमें है डरना
हम बेकसों की आहें ज़िमीं आस्मां हिलादें
समझे न कोई इनका, होता है कुछ असर ना

फ़िदाये बतन

न करना कभी बंद तुम ज़ुल्म ढाना
हमें भी इस ज़िद से नहीं बाज़ आना
भराओगे कबतक देखें जेलख़ाना
बनादो हमें गोली का चहें निशाना

यह भारत तुम्हें होगा आज़ाद करना
चले इसमें कुछ भी ना हीला बहाना
हों गांधी की कुल शर्तें मंज़ूर करना
किये बिन तुम्हारा लगे न ठिकाना
जो बैठा फ़िदाये वतन पर ही होना
डरेगा वह कब तुम चहो जो डराना
न अच्छा कभी बेकसों का सताना
कहें "शर्म्मा" जाने है इसको ज़माना

कंगाल भारत

माता बहिनों अब चर्ख़ा चलालो ज़रा
अपने भारत की लाज बचालो ज़रा
आलसीपन छोड़दो मिहनत पै अब कसलो कमर
अपने फ़न में हरतरह करके दिखादो तुम हशर
सूत के ढेर घर २ लगालो ज़रा
माता बहिनों अब चर्ख़ा चलालो ज़रा
लुटरहा भारत सितम क्या इसकी तुमको नहींख़बर

लीए जाते धन तुम्हारा हा विदेशी किस क़दर
ध्यान इसका तरफ़ भी लगालो ज़रा
माता बहिनों अब चर्ख़ा चलालो ज़रा
रुपया बहत्तर करोड़ जाता है विलायत सालोसाल
हो गये जिससे विदेशी किस क़दर हैं मालोमाल
हुआ कगाल भारत बचालो ज़रा
माता बहिनों अब चर्ख़ा चलालो ज़रा
सूत को तैयार कर बुनवालो खद्दर बेशुमार
एकदफ़ा भारत के अन्दर करदो इसकीमारा मार
नाम अपना सुशीला धरालो ज़रा
माता बहिनों अब चर्ख़ा चला लो ज़रा
किस क़दर रुपया तुम्हारे देशका बच जायगा
फिर एकदिन भारत तुम्हारा मालामाल दिखलायगा
कहन "शर्मा" न गांधी की टालो ज़रा
माता बहिनों अब चर्ख़ा चलालो ज़रा

आल्हा के शायक़ीनों

बहादुर ऊदल का चमचमाता नेज़ा मर्दाना मलखान की लप-लपाती तलवार दिलेर लाखन राना के तीरों की बौछार आल्हा और पृथ्वीराज की शेराना लड़ाई। हिन्दुस्तान के बड़े बड़े जङ्गी बहादुरों का मैदानेजङ्ग अगर आप पढ़ना चाहते हैं तो ख़ास मेरठ की छपी हुई असली आल्हा की किताबों को हमारे यहां से ख़रीदिये। तथा हाथरस के असली सांगीत व, रामायण पं० राधेश्याम जी कथावाचक बरेली की बनाई हुई तमाम पुस्तकें हमारे यहां से ख़रीदिये॥

राजा परमाल का ब्याह	।)	मनोकामना तीरथकी लड़ाई	।)
आल्हा की सगाई	।≈)	गढ़ बांदो की लड़ाई	॥≈)
जस्सराज बच्छराज का हाल	≢)	ब्रह्मा की सगाई	।–)
आल्हा का ब्याह	१≈)	आल्हा की निकासी	।≢)
ब्रह्मा का ब्याह	॥–)	बलखबुखारे की लड़ाई	१)
माढ़ो की लड़ाई	॥≈)	सिरसे की आखिरी लड़ाई	।≢)
सिरसे की पहिली लड़ाई	।≢)	ऊदल का ब्याह	।॥)
मलखान का ब्याह	॥।≈)	भुजरियों की लड़ाई	।≈)
भयंकर-राय का ब्याह	॥–)	संकलद्वीप की लड़ाई	।)
मछुला हरण	॥≈)	आल्हा मनौआ	।–)

आल्ह खण्ड की ५२ लड़ाइयां ख़ास महोवे की बोली में उमदा मोटे व चिकने काग़ज़ पर सुन्दर व साफ़ मौजूद हैं मये पुख़्ता जिल्द के मूल्य सिर्फ़ २॥) रुपये

मिलने का पता—

पं० बाबूराम शर्मा बुकसेलर बाँसमण्डी बरेली

श्रीराधेश्याम पुस्तकालय बरेली की बनाई हुई

रामायण की पुस्तकें

प्रिय मित्रो पं० राधेश्याम कथा वाचक बरेली की बनाई हुई रामायण की तमाम पुस्तकें व भजनों की तथा नाटक की पुस्तकें भी हमारे यहां से ख़रीदिये पुस्तकों के नाम व मूल्य इस प्रकार हैं।

राम जन्म	≡)	सीताहरन	≡)
पुष्प वाटिका	≡)	रामसुग्रीव की मित्रता	।)
धनुष यज्ञ	।)	अशोक वाटिका	≡)
राम विवाह	≡)	लंका दहिन	≡)
दशरथ का प्रतिज्ञापालन	≡)	विभीषण की शरणागति	≡)
कौशल्या माता से विदाई	≡)	अंगद रावण का सम्वाद	≡)
वन यात्रा	≡)	मेघनाद का शक्ति प्रयोग	।)
सुनी अयोध्या	≡)	सती सुलोचना	≡)
चित्र कूट में भरतमिलाप	≡)	रावण बध	।)
पंचवटी	≡)	राजतिलक	≡)
सीता वनवास	।)	रामाश्वमेध	।)
लवकुश की वीरता	।)	सतवन्ती सीता की विजय	।)

नोट—यह सब पुस्तकें उर्दू में भी मिल सकती हैं।

मिलने का पता—

पं० बाबूराम शर्मा बुकसेलर

बांस मंडी—बरेली

छपगया ! छपगया !! छपगया !!!

नया सांगीत

विल्वमंगल अर्थात् भक्त सूरदास

प्रिय मित्रो ! आप लोगों ने सांगीत तो बहुत से पढ़े होंगे परन्तु, यह सांगीत अपनी किस्म का अनोखा ही है यह वह एतिहासिक शिक्षाप्रद सांगीत है कि जिसके पढ़ने से ज्ञान प्राप्त होगा, और यह भी दिखलाया गया है, कि अपनी की हुई प्रतिज्ञा के कारण अपनी स्त्री को साधू की अर्पण कर देना परन्तु वचन न हारना, इसमें वह बात दिखलाई गई है कि एक मनुष्य बेश्या के इश्कमें ऐसा डूबा हुआ था कि अपनी पतिव्रता स्त्री को छोड़ अपने पिताको मरा हुआ छोड़ क्रियाकर्मसे पेशतर स्त्री को ससुर शोकमें बिलकती हुई छोड़ बेश्याके मकान पर जाने के कारण, रात के बारह बजे एक बडी भारी बरसाती नदी में एक स्त्री की लाश को पकड़ लक्कड़ समझ पार उतरना, और सांपको कमंद समझ कर बेश्या के इश्क में मकान पर चढ़जाना। प्रिय मित्रो ! ख्याल करने की बात है, कि वही शख्श ऐसा भक्त होना, कि जिसने यह समझकर कि अगर मेरी पापी आंखें ही जब नहीं होंगी, तब मुझ से कोई पाप ही नहीं होगा, ऐसा कह कर अपनी दोनों आंखें सूजों से फ़ोड़ लेना और वह बेश्या भी ऐसी भारी भक्त होना, कि जिसने परमात्मा के नाम पर अपना पेट चीर कर हृदय निकालकर देदेना, यकीन तो है कि आप लोग इस पुस्तक को पढ़कर आनन्द रूपी सागर में गोता मारने लगेंगे। कृपा करके एकबार अवश्य मंगाकर पढ़िये, ऐसी आनन्द दायक होने पर भी तीन भाग का दाम ॥≋) है।

मिलने का पता—

पं: बाबूराम शर्मा बुकसेलर बांसमंडी बांसबरेली